बी0ए0(प्रतिष्ठा)–तृतीय खण्ड

मनोविज्ञान पंचम पत्र

क्र.सं.	पाठ का नाम	पाठ संख्या	पृष्ठ
1.	समाज मनोविज्ञान से परिचय	1	2
~~2.~~	~~समाज मनोविज्ञान की विधियाँ~~ (Delit)	~~2~~	~~14~~
~~3.~~	~~समाजीकरण~~ (Delit)	~~3~~	~~29~~
4.	मनोवृत्ति या अभिवृत्ति	4	~~42~~ 14
5.	पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा	5	~~63~~ 35
6.	समूह	6	~~77~~ 49
7.	नेतृत्त्व	7	~~94~~ 66
~~8.~~	~~प्रचार~~ (Delit)	~~8~~	~~115~~
9.	जनमत	9	~~132~~ 87
10.	सामाजिक तनाव	10	~~148~~ 103

समाज मनोविज्ञान से परिचय

पाठ संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 परिचय

1.2 परिभाषायें

1.3 समाज मनोविज्ञान का स्वरूप

1.4 समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र एवं विषय विस्तार

1.5 समाज मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र के बीच संबंध

1.6 समाज मनोविज्ञान एवं मानवशास्त्र के बीच संबंध

1.7 सारांश

1.8 पाठ में प्रयुक्त शब्द कुंजी

1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1.10 अन्य उपयोगी पठन सामग्री

1.0 उद्देश्य

इस पाठ के कई उद्देश्य हैं। एक उद्देश्य यह बतलाना है कि समाज मनोविज्ञान का अर्थ क्या है और इसकी अपनी विशेषतायें क्या हैं। दूसरा उद्देश्य यह बतलाना है कि समाज मनोविज्ञान की विषयवस्तु तथा इसका क्षेत्र क्या है। दूसरे शब्दों में पाठकों को इस मनोविज्ञान की विषय वस्तु तथा इसके क्षेत्र से अवगत कराना इसका उद्देश्य है। इस पाठ का तीसरा उद्देश्य यह बतलाना है कि समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध समाज-शास्त्र तथा मानव-शास्त्र के साथ कैसा है। इसके अलावा इस पाठ का एक उद्देश्य यह देखना है कि पाठकों ने इस पाठ को कहाँ तक ग्रहण किया है। इसके लिए इस पाठ में कुछ लघु प्रश्न तथा कुछ दीर्घ प्रश्न दिये जायेंगे जिनका उत्तर लिख कर पाठकगण स्वयं अपनी उपलब्धि की जाँच कर सकेंगे।

1.1 परिचय

दूसरे विज्ञानों की तुलना में मनोविज्ञान को परिभाषित करना अधिक कठिन है, क्योंकि मनोविज्ञान की विषय-वस्तु तथा विधि हमेशा बदलती रही है। मनोविज्ञान में भी समाज-मनोविज्ञान की परिभाषा इसकी दूसरी शाखाओं की अपेक्षा और भी अधिक कठिन है। इसका एक कारण यह है कि समाज-मनोविज्ञान में बड़ी तेजी से शोध होते रहे हैं और इसका क्षेत्र तीव्र गति से विकसित होता रहा है। दूसरा कारण यह है कि समाज-मनोविज्ञान तथा वैयक्तिक मनोविज्ञान के बीच अन्तर करना बहुत कठिन है। वैयक्तिक मनोविज्ञान का अर्थ वह मनोविज्ञान है जिसमें ऐसे मनोविज्ञान विषयों का अध्ययन किया जाता है जिनका स्वरूप अधिक वैयक्तिक होता है। दूसरी ओर समाज-मनोविज्ञान का अर्थ वह मनोविज्ञान है जिसमें ऐसे मनोवैज्ञानिक विषयों का अध्ययन किया जाता है जिनका स्वरूप अधिक सामाजिक होता है। लेकिन, ऐसी मानव परिस्थितियों को प्राप्त करना कठिन है जहाँ सामाजिक कारणों का पूर्ण अभाव हो। अतः व्यावहारिक रूप से समाज-मनोविज्ञान तथा वैक्तिक मनोविज्ञान के बीच कोई कठोर सीमा-रेखा खींचना असम्भव है। तीसरा कारण यह है कि समाज-मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के बीच इतना गहरा सम्बन्ध है कि समाज-मनोविज्ञान के अपवर्तक स्वरूप को निर्धारित करना कठिन बन जाता है।

1.2 परिभाषाएँ

कई समाज मनोवैज्ञानिकों ने समाज-मनोविज्ञान को परिभाषित करने का सफल प्रयास किया है।

पहला सफल प्रयास शेरिफ और शेरिफ (Sherif and Sherif, 1956) ने किया। उन्होंने कहा कि समाज-मनोविज्ञान का सम्बन्ध समाज में होनेवाले मानव-व्यवहार से है। लेकिन इस परिभाषा से यह नहीं स्पष्ट हो पाता है कि समाज-मनोविज्ञान का सम्बन्ध किन-किन समाजिक परिस्थितियों से है।

क्रेच, क्रचफिलड तथा बैलेची (Krech, Crutchfield and Ballachey, 1962)ने समाज मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा कि ''समाज-मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति के समाज में होने के व्यवहार का विज्ञान है।'' यह परिभाषा वास्तव में शेरिफ तथा शेरिफ द्वारा दी गयी परिभाषा की नकल है, अन्तर केवल इतना है कि यहाँ ''व्यवहार'' शब्द का इस्तेमान व्यापक अर्थ में किया गया है, जिसमें व्यवहार तथा अनुभव दोनों शामिल हैं। लेकिन, इस परिभाषा से समाज-मनोविज्ञान का पूरा स्वरूप पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाता है। इस परिभाषा से न तो यह स्पष्ट हो पाता है कि सामाजिक व्यवहार किसे कहते हैं और न यह कि सामाजिक परिस्थितियाँ कौन-कौन सी हैं। असल में यह परिभाषा इतनी संक्षिप्त है कि इससे समाज-मनोविज्ञान का व्यापक क्षेत्र स्पष्ट नहीं हो पाया है।

चैपलिन (Chaplin, 1975) के द्वारा दी गयी समाज-मनोविज्ञान की परिभाषा अधिक स्पष्ट तथा समग्र है। उनके अनुसार समाज-मनोविज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन दो सामाजिक परिस्थितियों में किया जाता है: अपने समूह के अन्दर तथा दो समूहों के बीच। व्यक्ति जिस समूह का सदस्य होता है, वह उस समूह के लोगों के साथ व्यवहार करता है। इसके अलावा वह दूसरे-दूसरे समूहों के लोगों के साथ भी व्यवहार करता है। समाज-मनोविज्ञान व्यक्ति के इन दोनों प्रकार के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। उनके अपने शब्दों में ''समाज-मनोविज्ञान समूहों के भीतर व्यक्तियों की व्यवहार सम्बन्धी पारस्परिक क्रिया तथा समूहों के बीच पारस्परिक-क्रिया से सम्बन्ध रखता है।'' यह परिभाषा पहली दो परिभाषाओं की तुलना में अधिक समग्र है, क्योंकि इससे दो प्रकार की सामाजिक परिस्थितियों का बोध होता है। फिर भी, यह परिभाषा भी केवल आंशिक रूप से ही समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र को स्पष्ट कर पाती है।

इसी प्रकार आलपोर्ट (Allport, 1985) ने समाज-मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा कि ''समाज-मनोविज्ञान इस बात को समझने तथा व्याख्या करने का एक प्रयास है कि व्यक्तियों के विचार, भाव तथा व्यवहार दूसरों की वास्तविक,

कल्पित तथा लक्षित उपस्थिति से किस रूप में प्रभावित होते हैं।'' लेकिन, आर॰ एस॰ रेबर (1987) के द्वारा दी गयी परिभाषा न केवल अधिक आधुनिक है, बल्कि अधिक समग्र, सफल तथा संतोषजनक भी। उनके अनुसार ''समाज-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें मानव व्यवहार के उन सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है, जो व्यक्ति के, दूसरे व्यक्तियों, समूहों, सामाजिक संस्थाओं तथा सम्पूर्ण समाज के प्रति सम्बन्धों में निहित होते हैं।'' यह परिभाषा समाज-मनोविज्ञान के स्वरूप तथा इसके क्षेत्र को स्पष्ट करने में अधिक सफल है। अतः यह परिभाषा अन्य परिभाषाओं की तुलना में अधिक समग्र तथा संतोषप्रद है। इसके विशलेषण से समाज-मनोविज्ञान के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं-

(1) समाज-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक मुख्य शाखा है। एक ओर समाज-मनोविाान शुद्ध मनोविज्ञान की शाखा है और दूसरी ओर यह व्यावहारिक मनोविज्ञान की शाखा है। कारण, यह मनोविज्ञान वास्तव में शुद्ध मनोविज्ञान तथा व्यावहारिक मनोविज्ञान दोनों की शर्तों को पूरा करता है।

(2) समाज-मनोविज्ञान की विषय-वस्तु व्यक्ति का वह व्यवहार है, जो सामाजिक परिस्थितियों में होता है।

(3) इस परिभाषा से स्पष्ट है कि समाज-मनोविज्ञान का क्षेत्र काफी व्यापक है। व्यक्ति का शायद ही कोई व्यवहार ऐसा होता हो जो सामाजिक परिस्थिति से बाहर होता है। इसीलिए कहा जाता है कि सभी मनोविज्ञान सामाजिक मनोविज्ञान है।

(4) समाज-मनोविज्ञान में जिन सामाजिक व्यवहारों अथवा सामाजिक पारस्परिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है वे संगठित तथा उद्देश्य निर्देशित होती हैं। पारस्परिक क्रिया या सामाजिक व्यवहार वास्तव में व्यक्ति के संवेगों, विचारों, स्मृतियों, संज्ञानों आदि का संगठित परिणाम है। यह संगठित व्यवहार वास्तव में उद्देश्यपूर्ण होता है। किसी भीखमंगे को भीख देना अथवा मुल्ला या पंडित का सम्मान करना भी उद्देश्यपूर्ण व्यवहार है।

(5) समाज-मनोविज्ञान का मौलिक सम्बन्ध व्यक्ति से है, उस व्यक्ति से जो समाज में रहता है। यहाँ सामाजिक मानव का अध्ययन किया जाता है और ऐसे संप्रत्ययों पर बल दिया जाता है जो वैयक्तिक व्यवहार के अध्ययन से प्राप्त होते हैं। इस अर्थ में समाज-मनोविज्ञान समाजशास्त्र से भिन्न है, क्योंकि समाजशास्त्र में समाज का अध्ययन किया जाता है और ऐसे संप्रत्ययों पर बल दिया जाता है जो सामाजिक संस्थाओं से प्राप्त होते हैं।

(6) समाज-मनोविज्ञान का मौलिक उद्देश्य सामाजिक व्यवहार की इकाई अर्थात् अन्तर्वैयक्तिक व्यवहार-घटना का अध्ययन करना है। इसी घटना के कारण समान परिस्थितियों के होने पर भी भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के व्यवहार भिन्न-भिन्न हुआ करते हैं।

1.3 समाज-मनोविज्ञान का स्वरूप (Nature)

समाज-मनोविज्ञान की भिन्न-भिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण से इतना अवश्य स्पष्ट हो जाता है कि इसका स्वरूप काफी जटिल है। समाजशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों के विचारों के आलोक में समाज-मनोविज्ञान के स्वरूप के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें उल्लेखनीय हैं:-

1.3.1 समाज-मनोविज्ञान: एक शुद्ध मनोविज्ञान :

समाज-मनोविज्ञान के स्वरूप पर विचार करने से पता चलता है कि यह एक शुद्ध मनोविज्ञान या मौलिक विज्ञान है। कारण, यह शुद्ध मनोविज्ञान अथवा मौलिक विज्ञान की शर्तों अथवा अभिधारणाओं को पूरा करता है। जैसे-

(1) शुद्ध मनोविज्ञान की एक अभिधारणा या शर्त यह है कि इसमें विषय-वस्तु का अध्ययन व्यवस्थित रूप से

किया जाता है। इस अध्ययन के लिए आवश्यकता के अनुसार प्रयोगशाला-प्रयोग, क्षेत्र-प्रयोग या क्षेत्र-अध्ययन का व्यवहार किया जाता है। शुद्ध मनोविज्ञान की यह विशेषता समाज-मनोविज्ञान में भी पाई जाती है। यहाँ भी आवश्यकता के अनुसार क्षेत्र-प्रयोग या क्षेत्र-अध्ययन का व्यवहार करके सामाजिक विषयों या घटनाओं का विधिवत् अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन पर समाज-मनोविज्ञान को शुद्ध मनोविज्ञान या मौलिक विज्ञान कहना युक्तिसंगत है।

(2) शुद्ध मनोविज्ञान की दूसरी विशेषता यह है कि इसमें परिकल्पना या परिकल्पनाओं का निर्माण किया जाता है। किसी अध्ययन-विषय के सम्बन्ध में कोई परिकल्पना बनायी जाती है। फिर, विधिवत् अध्ययन के आधार पर उसकी जाँच की जाती है। सामान्य मनोविज्ञान एक शुद्ध मनोविज्ञान है जिसमें प्रेरणा से संबंधित परिकल्पना बनायी जा सकती है कि सीखने के लिए दण्ड से पुरस्कार अधिक लाभदायक है। फिर प्रयोग द्वारा इसकी जाँच की जा सकती है। अतः इस आधार पर भी समाज-मनोविज्ञान वास्तव में शुद्ध मनोविज्ञान होने का सही दावा करता है।

(3) शुद्ध मनोविज्ञान की तीसरी विशेषता यह है कि इसमें अध्ययनों के आधार पर प्राप्त परिणामों के आलोक में जब परिकल्पना सही प्रमाणित हो जाती है तो उसे सिद्धान्त के रूप में मान लिया जाता है। थौर्नडाइक (1896) ने बिल्ली, चूहे, आदि पशुओं पर प्रयोग करके इस परिकल्पना को प्रमाणित कर दिया कि सीखने का आधार तत्परता, अभ्यास तथा प्रेरणा है। अतः इसे सिद्धान्त के रूप में मान लिया गया। यह विशेषता समाज-मनोविज्ञान में भी पाई जाती है। यहाँ भी परिकल्पना के सही प्रमाणित होने पर उसे सिद्धान्त के रूप में मान लिया जाता है। फेस्टिंगर ने मनुष्यों पर प्रयोग करके इस परिकल्पना को प्रमाणित कर दिया कि संज्ञानात्मक असंवादिता के कारण मनोवृत्ति बदल जाती है। अतः इसे एक सिद्धान्त के रूप में मान लिया गया।

(4) शुद्ध मनोविज्ञान की चौथी अभिधारणा या विशेषता यह है कि इसमें नियमों का निर्माण किया जाता है। जब भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त का प्रमाणीकरण हो जाता है तो इसे एक नियम का रूप दे दिया जाता है। थौर्नडाइक ने सीखने के तीन नियम अर्थात् तत्परता-नियम, अभ्यास-नियम तथा प्रभाव-नियम का निर्माण इसी तरह किया। यह बात समाज-मनोविज्ञान में भी है। यहाँ भी किसी सिद्धान्त के प्रमाणीकरण के बाद उसे नियम का रूप दे दिया जाता है।

स्पष्ट है कि समाज-मनोविज्ञान में शुद्ध मनोविज्ञान की सभी अभिधारणायें शर्तें या विशेषतायें पाई जाती हैं। अतः समाज-मनोविज्ञान वास्तविक अर्थ में शुद्ध मनोविज्ञान की एक शाखा है। इस अर्थ में यह सामान्य मनोविज्ञान, बाल-मनोविज्ञान, आसामान्य मनोविज्ञान, आदि शुद्ध मनोवैज्ञानिकों से अभिन्न तथा शिक्षा मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान, आदि व्यावहारिक मनोविज्ञानों से भिन्न है।

1.3.2 समाज-मनोविज्ञान : एक व्यावहारिक मनोविज्ञान

समाज-मनोविज्ञान के स्वरूप के सम्बन्ध में एक उल्लेखनीय बात यह है कि यह एक ओर शुद्ध मनोविज्ञान है और दूसरी ओर व्यावहारिक मनोविज्ञान है। शुद्ध मनोविज्ञान के रूप में इसकी व्याख्या ऊपर की जा चुकी है। अब व्यावहारिक मनोविज्ञान के रूप में इसकी व्याख्या यहाँ की जायेगी। व्यावहारिक मनोविज्ञान उसे कहते हैं, जिसमें व्यवहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। इस प्रकार के मनोविज्ञान में सिद्धांतों तथा नियमों के आलोक में मानव जीवन की विभिन्न व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करके मानव जीवन को सुखद बनाने का प्रयास किया जाता है।

व्यावहारिक मनोविज्ञान की विशेषता समाज-मनोविज्ञान में भी है। कारण, यहाँ सामाजिक वातावरण में मनुष्य की व्यावहारिक समस्या का समाधान किया जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस हैसियत से उसका कई सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वह जिस समाज का सदस्य होता है, उसके प्रति उसके कुछ निश्चित कर्तव्य होते

हैं। उसके कर्तव्यों को निभाने में समाज-मनोविज्ञान सहायक होता है। जैसे-हमारे समाज में दहेज, जातिभेद, जातिगत दंगे, साम्प्रदायिक दंगे, भिखमंगी, वेश्यावृति आदि अनेक व्यावहारिक समस्यायें हैं, जिनके समाधान के लिए समाज-मनोविज्ञान सदा प्रयत्नशील हैं। इन समस्याओं के समाधान का प्रयास शुद्ध मनोविज्ञान के सिद्धांतों तथा नियमों के आलोक में किया जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि समाज-मनोविज्ञान का स्वरूप मनोविज्ञान की दूसरी शाखाओं से भिन्न है। मनोविज्ञान की अन्य शाखायें या तो शुद्ध मनोविज्ञान की श्रेणी में आती हैं या व्यावहारिक मनोविज्ञान की श्रेणी में। लेकिन, समाज-मनोविज्ञान एक ही साथ दोनों श्रेणियों में आता है। इसका अपूर्व स्वरूप है, जो इसे अन्य शाखाओं से भिन्न बना देता है।

1.3.3 पारस्परिक क्रिया की विशेषतायें :

समाज-मनोविज्ञान सामाजिक पारस्परिक क्रियाओं का विज्ञान है। सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों में व्यक्तियों के बीच, होनेवाले व्यवहारों को पारस्परिक क्रिया कहते हैं। यह पारस्परिक क्रिया व्यक्ति तथा व्यक्ति के बीच, व्यक्ति तथा समूहों के बीच, व्यक्ति तथा सामाजिक स्थान के बीच और व्यक्ति तथा सम्पूर्ण समाज के बीच देखी जाती है।

एक व्यक्ति अपने व्यवहार से दूसरे व्यक्ति (ओ) को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। दूसरा व्यक्ति (ओ) पहले व्यक्ति (पी) दूसरे व्यक्ति (ओ) के व्यवहार या प्रतिक्रिया से प्रभावित होकर कोई विशेष व्यवहार या प्रतिक्रिया करता है। अत: पी तथा ओ के बीच होनेवाली इसी क्रिया- प्रतिक्रिया को पारस्परिक क्रिया कहते हैं।

1.3.4 व्यवहार के विश्लेषण के प्रकार :

पारस्परिक क्रिया के समय व्यक्तियों के व्यवहारों का स्वरूप क्या होगा, इसकी जानकारी के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि उस व्यवहार को उत्पन्न करने में किन-किन कारकों अथवा निर्धारकों का हाथ होता है। इस ज्ञान के हो जाने के बाद पारस्परिक क्रिया में भाग लेनेवाले व्यक्तियों के व्यवहार के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करना संभव हो सकता है। सेकर्ड तथा बैकमैन (1974) ने पारस्परिक क्रिया अथवा इसमें भाग लेनेवाले व्यक्तियों के व्यवहार के स्वरूप को निर्धारित करने के लिए इसका विश्लेषण निम्नलिखित तीन तन्त्रों में किया है :

(i) **व्यक्तित्व-तन्त्र :** व्यवहार का एक मुख्य निर्धारक व्यक्तित्व तन्त्र है। पारस्परिक क्रिया के समय किसी व्यक्ति का व्यवहार कैसा होगा, यह बात उस व्यक्ति के व्यक्तित्व-तन्त्र पर निर्भर करती है। अन्य बातें समान रहने पर भी व्यक्तित्व-तन्त्र में अन्तर होने के कारण, पारस्परिक क्रिया में भाग लेने वाले व्यक्तियों का व्यवहार भिन्न बन जाता है।

व्यक्तित्व-तन्त्र के अन्तर्गत व्यक्तित्व-शीलगुणों, मनोवृत्तियों, आवश्यकताओं, भावों, संवेगों, संज्ञानों, आदतों आदि की गणना की जाती है।

(ii) **सामाजिक-तन्त्र :** पारस्परिक क्रिया के समय होनेवाले व्यवहार के विश्लेषण का दूसरा आधार सामाजिक तन्त्र है। कारण व्यक्तित्व-तन्त्र समान रहने पर भी सामाजिक तन्त्र में भिन्नता होने पर, दो व्यक्तियों का व्यवहार एक दूसरे से भिन्न बन जाता है।

सामाजिक व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति एक या एक से अधिक सामाजिक भूमिकाओं में होता है। एक व्यक्ति की सामाजिक भूमिका दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों से पृथक नहीं होती है, बल्कि गहरे तौर पर संबंधित होती है। इस प्रकार किसी सामाजिक व्यवस्था में भिन्न-भिन्न व्यक्त्यिों की सामाजिक भूमिकाओं की एक जाली बन जाती है, जिसे सामाजिक-तन्त्र कहते हैं। जैसे- परिवार एक सामाजिक तन्त्र है, जिसमें पति तथा पत्नी, पिता तथा बच्चे, माता तथा बच्चे, भाई तथा बहन आदि की सामाजिक भूमिकाओं का एक निश्चित जाल पाया जाता है, इसी प्रकार जेलखाना, मठ, अस्पताल, स्कूल आदि सामाजिक-तन्त्र के उदाहरण हैं।

(iii) **सांस्कृतिक तन्त्र :** पारस्परिक क्रिया अथवा सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण का तीसरा तंत्र तथा

अंतिम आधार सांस्कृतिक तंत्र है। पारस्परिक क्रिया के समय होनेवाले व्यवहार के समुचित मूल्यांकन के लिए व्यक्तित्व-तंत्र तथा सामाजिक तंत्र के साथ-साथ सांस्कृतिक तन्त्र का उपयोग करना भी आवश्यक है।

प्रत्येक संस्कृति के निश्चित मूल्य, विश्वास, परम्परायें तथा मानदण्ड होते हैं। इन्हें संस्कृति-प्रतिरूप कहते हैं। इनका गहरा प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार या पारस्परिक क्रिया पर पड़ता है। अत: व्यक्ति के व्यवहार या पारस्परिक क्रिया को उस संस्कृति के प्रतिरूपों के आलोक में समझना आवश्यक है, जिसका वह सदस्य है। सांस्कृतिक प्रतिरूपों में भिन्नता के कारण ही कोई एक हाथ उठाकर, कोई दोनों हाथ को जोड़कर, कोई सिर झुकाकर और कोई जीभ निकाल कर एक दूसरे का अभिनंदन करता है। सांस्कृतिक मूल्यों में अन्तर होने के कारण ही भारतीय पत्नियाँ अपने पति को पतिदेव समझकर उनके साथ व्यवहार करती हैं, जबकि अमेरिकी पत्नियाँ केवल लिंग-साथी समझकर व्यवहार करती हैं।

स्पष्ट हुआ कि पारस्परिक क्रिया अथवा सामाजिक व्यवहार को समुचित रूप में समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसका विश्लेषण व्यक्तित्व-तन्त्र, सामाजिक तन्त्र तथा सांस्कृतिक तन्त्र के आलोक में किया जाये।

1.4 समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र एवं विषय विस्तार

समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र को निर्धारित करना कठिन है। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि इसका विषय-अध्ययन व्यापक तथा काफी विस्तृत है। दूसरा कारण यह है कि विज्ञान की हैसियत से समाज-मनोविज्ञान का इतिहास बहुत छोटा है। समाज-मनोविज्ञान वैज्ञानिक इतिहास 1908 में प्रकाशित मैक डूगल (1980) की पुस्तक "सोशल साइकोलोजी" से आरम्भ हुआ और तब से इसका क्षेत्र तेजी के साथ बदलता और विस्तृत होता जा रहा है। आज भी इसका क्षेत्र तीव्र गति से व्यापक होता जा रहा है और बदलता जा रहा है। इस कारण भी समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र या इसके विषय विस्तार का निर्धारण कठिन बन गया है। इन कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र तथा इसके अन्तर्गत समाधान हेतु सामाजिक समस्याओं को निम्नलिखित स्तम्भों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) **व्यक्ति-व्यवहार :** समाज-मनोविज्ञान का मौलिक सम्बन्ध व्यक्ति-व्यवहार के सामाजिक विज्ञान से है। अत: समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र के अंतर्गत समाज में होनेवाले व्यक्ति के अनुभव एवं व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। अत: इसके क्षेत्र के अन्तर्गत समाज-मनोविज्ञान कई समस्याओं के समाधान का प्रयास करता है। जैसे, व्यक्ति-व्यवहार का विश्लेषण किन आधारों पर किया जाए, यह व्यवहार अकेले में संभव है या नहीं, यह व्यवहार संगठित होता है या असंगठित, आदि।

(2) **समाजीकरण :** समाजीकरण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा बच्चे अपने समाज के नियमों, मानदण्डों, मूल्यों एवं रीति-रिवाजों के अनुकूल व्यवहार करना सीख लेते हैं। ऐसे व्यवहार को सामाजिक व्यवहार कहते हैं। जो व्यवहार भिन्न होता है, उसे असामाजिक व्यवहार कहते हैं। आगे चलकर वे समाजिक या असामाजिक बन जाते हैं। अत: समस्या यह है कि बच्चे असामाजिक क्यों बन जाते हैं, वे क्यों असामाजिक व्यवहारों को सीख लेते हैं, उनमें सामाजिक व्यवहार क्यों नहीं विकसित हो पाते हैं या उन्हें फिर से सामाजिक कैसे बनाया जा सकता है, इन सारी समस्याओं का समाधान समाज-मनोवैज्ञानिक करते हैं।

(3) **समूह तथा समूह-व्यवहार :** समाज-मनोविज्ञान का मौलिक सम्बन्ध व्यक्ति से है, समूह से नहीं, व्यक्ति-व्यवहार से है, समूह व्यवहार से नहीं। लेकिन, व्यक्ति-व्यवहार पर समूह-सम्बद्धता का प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण एक व्यक्ति का व्यवहार अकेले में समूह में समान नहीं हो पाता है। समूह-प्रभाव के कारण व्यक्तियों के व्यवहार भिन्न-भिन्न हो जाते हैं। इसीलिए, समाज-प्रभाव के कारण समूह से सम्बन्धित अनेक बातों यथा समूह की रचना, इसके कार्य, इसकी प्रभावशीलता, समूह-बल आदि का अध्ययन किया जाता है। लेकिन, इस क्षेत्र में जटिल समस्या यह है कि समूह परिस्थितियों में व्यक्ति व्यवहार क्यों बदल जाता है, समूह गति का क्या अर्थ है और इसका प्रभाव व्यक्ति व्यवहार पर किस रूप में पड़ता है, आदि। इन समस्याओं के समाधान का प्रयास समाज-मनोवैज्ञानिक करते हैं।

(4) **भीड़ तथा भीड़-व्यवहार :** समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र में भीड़ तथा भीड़-व्यवहार का अध्ययन इसलिए आवश्यक हो जाता है कि भीड़ परिस्थितियों में व्यक्ति का व्यवहार बिल्कुल बदल जाता है। व्यक्ति-व्यवहार तथा समूह-व्यवहार की अपेक्षा व्यक्ति व्यवहार तथा भीड़-व्यवहार के बीच अधिक भिन्नता पाई जाती है। ऐसा क्यों? यह एक बड़ी जटिल समस्या है जिसके समाधान के लिए समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत भीड़ के भिन्न-भिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाता है- भीड़ व्यवहार की क्या विशेषतायें हैं, समूह-मन का संप्रत्यय कहाँ तक सही है, भीड़ के कितने प्रकार हैं, भीड़ के कितने सिद्धांत हैं और वे कहाँ तक भीड़-व्यवहार की व्याख्या करने में सफल हैं, इत्यादि।

(5) **नेतृत्व तथा नेतृत्व-व्यवहार :** समाज-मनोविज्ञान का गहरा संबंध नेतृत्व तथा नेतृत्व-व्यवहार से है। कारण, नेता के व्यवहार का प्रभाव अनुयायियों के व्यवहार पर तथा अनुयायियों के व्यवहार का प्रभाव कुछ हद तक नेता के व्यवहार पर पड़ता है। इसके अलावा नेतृत्व के प्रकार का प्रभाव नेता तथा अनुयायियों की पारस्परिक क्रियाओं पर पड़ता है। अतः नेतृत्व का उद्भव तथा विकास कैसे होता है, नेतृत्व की कौन-कौन सी विधायें हैं, नेतृत्व के कौन-कौन से प्रकार हैं तथा उनका नेतृत्व व्यवहार पर किस रूप में पड़ता है, नेता के लिए अपेक्षित शीलगुण क्या हैं, नेता को कैसे प्रशिक्षित किया जा सकता है, आदि समस्याओं के समाधान का प्रयास समाज-मनोविज्ञान करता है।

(6) **मनोवृत्ति, स्थिराकृति एवं पूर्वधारणा :** संज्ञान, सामाजिक पारस्परिक क्रिया तथा अन्तर्वैयक्तिक व्यवहार पर मनोवृत्ति, स्थिराकृति तथा पूर्वधारणा का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस कारण समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्दर इन सबका अध्ययन आवश्यक हो जाता है। मनोवृत्ति का क्या अर्थ है, यह विश्वास से कैसे भिन्न है, इसके कौन-कौन से संघटक हैं, इसके निर्माण पर किन किन कारकों का प्रभाव पड़ता है? इसे किन किन विधियों द्वारा मापा जा सकता है, किन परिस्थितियों में मनोवृति परिवर्तन संभव होता है, आदि बातों का अध्ययन समाज-मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। इस क्षेत्र में पूर्वधारणा से संबंधित समस्यायें अधिक गंभीर हैं। भिन्न भिन्न प्रकार की पूर्वधारणाओं का विकास क्यों और कैसे होता है, उन्हें कैसे रोका जा सकता है या दूर किया जा सकता है, यह एक गंभीर समस्या है, जिसके समाधान में आज भी समाज-मनोवैज्ञानिक लगे हुए हैं।

(7) **प्रेरणा तथा संज्ञान :** समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्दर प्रेरणा तथा संज्ञान के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाता है। जैविक प्रेरणा- प्यास, भूख, काम, आदि तथा सामाजिक प्रेरक- सम्बंधन आवश्यकता, अर्जनात्मकता, सम्मान अधिकार आदि का प्रभाव व्यक्ति की पारस्परिक प्रतिक्रियाओं पर पड़ता है। इसलिए इन सभी प्रेरकों के स्वरूप, विकास, मापन तथा पारस्परिक प्रतिक्रियाओं पर उनके प्रभावों का अध्ययन समाज-मनोवैज्ञानिक करते हैं। इसी प्रकार संज्ञान के स्वरूप, विशेषताओं, निर्धारकों तथा प्रभावों का अध्ययन भी समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र में किया जाता है।

(8) **प्रचार, जनमत एवं अफवाह :** व्यक्ति-व्यवहार, समूह-व्यवहार या पारस्परिक प्रतिक्रिया पर प्रचार, जनमत तथा अफवाह का निश्चित प्रभाव पड़ता है। इसलिए समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र में इन सबका अध्ययन करना आवश्यक होता है। प्रचार से संबंधित कई समस्यायें हैं- प्रचार क्या है, प्रचार को कैसे प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है, इसके कौन कौन से साधन हैं आदि। इसी तरह जनमत से सम्बन्धित अनेक समस्यायें हैं- जनमत का सही अर्थ क्या है, इसका निर्माण कैसे होता है, इसके साधन क्या हैं, इसे कैसे मापा जाता है, आदि। अफवाह के सम्बन्ध में मुख्य समस्या यह है कि अफवाह क्यों फैलती है, कुछ लोग अफवाह-व्यापारी क्यों होते हैं, आदि । समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत इन सभी समस्याओं के निदान का प्रयास किया जाता है।

(9) **भाषा तथा संचार :** पारस्परिक प्रतिक्रियाओं तथा अन्तर्वैयक्तिक व्यवहारों पर भाषा तथा संचार का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। इस कारण समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र में भाषा तथा संचार से संबंधित समस्याओं का अध्ययन भी आवश्यक हो गया है। आधुनिक समाज-मनोविज्ञान इन समस्याओं के समाधान में सक्रिय है कि भाषा तथा संज्ञान में क्या सम्बन्ध है, भाषा के विकास पर किन किन कारकों का प्रभाव पड़ता है, भाषा तथा सामाजिक कार्यशीलता में कैसा

संबंध है, संचार पर संज्ञान, आवश्यकता तथा मनोवृत्ति का क्या प्रभाव पड़ता है, आदि।

(10) **व्यक्ति-प्रत्यक्षीकरण तथा सामाजिक प्रत्यक्षीकरण :** आधुनिक समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत प्रत्यक्षीकरण के गहन प्रकारों का अध्ययन भी शामिल कर लिया गया है। विशेष रूप से व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण तथा सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का निश्चित प्रभाव पारस्परिक प्रतिक्रियाओं पर पड़ता है तथा आश्रित चरों के रूप में प्रत्यक्षीकरण के इन दोनों पक्षों पर नाना प्रकार के व्यक्तिगत तथा सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ता है।

(11) **भूमिका-तनाव :** हमारे व्यवहारों पर हमारी भूमिका श्रेणी या वर्ग श्रेणी का प्रभाव पड़ता है। कारण, प्रत्येक भूमिका के लिए कुछ निश्चित अधिकार तथा कर्तव्य होते हैं। कभी कभी एक ही साथ दो विरोधी भूमिकाओं में होने पर व्यक्ति मानसिक तनाव महसूस करता है, जिसे भूमिका तनाव कहते हैं। एक समाज मनोवैज्ञानिक के लिए अब इस तनाव का अध्ययन आवश्यक इसलिए हो जाता है कि सामाजिक व्यस्था की जटिलता के कारण एक ही व्यक्ति को भिन्न भिन्न भूमिकाओं में व्यवहार करना पड़ता है। एक ही युवक कहीं बेटा, कहीं पति तथा कहीं बाप की भूमिका अदा करता है। अत: इस क्षेत्र में समस्या यह है कि भूमिका-तनाव क्यों उत्पन्न होता है तथा इसे कैसे दूर किया जाता है।

(12) **सामाजिक तनाव तथा समूह संघर्ष :** आधुनिक युग में सामाजिक तनाव तथा समूह-संघर्ष का अध्ययन समाज मनोविज्ञान में आवश्यक इसलिए बन गया है कि सामाजिक जीवन का हर अंग इस तनाव या संघर्ष से प्रभावित हो रहा है। अत: समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत सामाजिक तनाव से संबंधित अनेक समस्याओं के निदान का प्रयास किया जाता है। जैसे, सामाजिक तनाव का मनोवैज्ञानिक अर्थ क्या है, इस तनाव के कौन कौन से प्रकार हैं तथा उनका प्रभाव व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र पर किन किन रूपों में पड़ता है, इसके कारण कया हैं तथा इसे कैसे रोका जा सकता है। इसी प्रकार समूह-संघर्ष के मूलाधार क्या हैं, इनका निराकरण कैसे किया जा सकता है, आदि समस्याओं के समाधान का प्रयास समाज-मनोवैज्ञानिक करते हैं।

(13) **आक्रमण तथा उग्रता :** जैसा कि फेल्डमैन (1985) ने लिखा है, कि आधुनिक समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र का एक आवश्यक अंग आक्रमण तथा उग्रता का अध्ययन बन गया है। पारस्परिक प्रतिक्रियाओं तथा अन्तर्वैयक्तिक व्यवहारों को निर्धारित करने में आक्रमणशीलता एक महत्त्वपूर्ण अन्तर्वैयक्तिक प्रतिक्रिया-शीलगुण बन गयी है, जिसकी अभिव्यक्ति नाना प्रकार के उग्र व्यवहारों जैसे- मार पीट, आगजनी, साम्प्रदायिक दंगे, जातिगत दंगे, आदि रूपों में हमेशा होती रहती है। अत: आक्रमण तथा उग्रता के क्या कारण हैं, आक्रमण प्रवृत्ति जन्मजात है या अर्जित, किन परिस्थितियों में व्यक्ति आक्रमण तथा उग्रता का प्रदर्शन अधिक करता है और क्यों, इसके नियंत्रण तथा निदान के लिए कौन कौन से उपाय किये जाते हैं, आदि समस्याओं के समाधान में आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिक सक्रिय हैं।

स्पष्ट है कि समाज-मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत अनेक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है तथा उनके समाधान का प्रयास भी। यह भी स्पष्ट है कि समाज-मनोविज्ञान का क्षेत्र सचमुच काफी व्यापक है, इतना व्यापक कि अभी भी हम सभी सामाजिक समस्याओं को यहाँ प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं हो सके हैं।

1.5 समाज-मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के बीच संबंध

समाज-मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के बीच घनिष्ठ संबंध है। यह सही है कि समाज-मनोविज्ञान में व्यक्ति का अध्ययन किया जाता है और समाजशास्त्र में समूह या समाज का। परन्तु समूह या समाज का निर्माण व्यक्तियों से होता है। अत: समूह के अध्ययन के बिना व्यक्ति का अध्ययन पूरा नहीं हो सकता है। इस अर्थ में समाज-मनोविज्ञान स्वयं समाजशास्त्र पर आधारित है। इस वास्तविकता से भी दोनों विज्ञानों में गहरा सम्बन्ध का प्रमाण मिलता है कि दोनों के अध्ययन विषयों में बड़ी समानता है।

समाज-मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के बीच घनिष्ठ संबंध होने के कारण कई समानतायें दीख पड़ती हैं-

(1) दोनों की गणना सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत होती है।

(2) दोनों में समूह तथा भीड़ का अध्ययन किया जाता है।

(3) दोनों में संस्कृति तथा व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है।

(4) दोनों में सर्वेविधि तथा क्षेत्र अध्ययन का व्यवहार किया जाता है।

(5) दोनों का दृष्टिकोण आनुभविक होता है।

फिर भी, समाज-मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र में कई स्पष्ट अन्तर है-

(1) समाज-मनोविज्ञान एक समर्थक विज्ञान है जबकि समाजशास्त्र नहीं है।

(2) समाज-मनोविज्ञान के अध्ययन का केन्द्र व्यक्ति है जबकि समाजशास्त्र के अध्ययन का केन्द्र समाज या समूह है।

(3) समाजशास्त्री प्रधानतः समूह या समाज में व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहारों की समानताओं तथा समस्याओं में रूचि रखते हैं तथा इनकी व्यवख्या समान सांस्कृतिक प्रतिरूपों के आधार पर करते हैं। दूसरी ओर समाज-मनोवैज्ञानिक सामाजिक व्यवहारों की विभिन्नताओं पर भी बल देते हैं तथा इनकी व्याख्या जैविक तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का आधार पर करते हैं।

(5) समाज-मनोविज्ञान में प्रयोग विधि के उपयोग के कारण समाजशास्त्र की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिकता पाई जाती है।

1.6 समाज-मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र के बीच संबंध

मानवशास्त्र में मनुष्य तथा संस्कृति के उद्‌भव तथा विकास का अध्ययन किया जाता है। समाज-मनोविज्ञान में सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। लेकिन व्यक्ति, समाज तथा संस्कृति में गहरा संबंध होता है। व्यक्तिके व्यवहार का समुचित अध्ययन समाज तथा संस्कृति के अध्ययन के बिना संभव नहीं है। कारण, व्यक्ति के व्यवहार पर सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों का गहरा प्रभाव पड़ता है।

इन दोनों विज्ञानों में कुछ समानतायें पाई जाती हैं जिससे इनके बीच घनिष्ठ संबंध का बोध होता है।

(1) इन दोनों विज्ञानों की गणना सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्गत की जाती है।

(2) दोनों में संस्कृति तथा समाज का अध्ययन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से होता है।

(3) दोनों में सर्वेविधि तथा क्षेत्र अध्ययन का उपयोग होता है।

फिर भी, ये दोनों दो भिन्न विज्ञान हैं। कारण, इनमें कई अन्तर पाये जाते हैं।

(1) समाज-मनोविज्ञान को एक समर्थ विज्ञान माना जाता है जबकि मानव-शास्त्र को नहीं।

(2) समाज-मनोविज्ञान की विषय वस्तु वास्तव में व्यक्ति है जबकि मानवशास्त्र की विषय वस्तु समाज या संस्कृति है।

(3) समाज-मनोविज्ञान का संबंध व्यक्ति के वर्तमान व्यवहार से है जबकि मानवशास्त्र का संबंध मानव जीवन के अतीत की घटनाओं से है।

(4) समाज-मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार पर संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

1.7 सारांश

पाठ के इस भाग में हम सारांश को प्रस्तुत कर रहे हैं।

(क)

(1) समाज-मनोविज्ञान को परिभाषित करना अधिक कठिन है क्योंकि इसका क्षेत्र शोध के कारण काफी विकसित हुआ है,

(2) विभिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण से कई बातें स्पष्ट होती हैं,

(3) समाज मनोविज्ञान शुद्ध एवं व्यावहारिक दोनों है,

(4) समाज मनोविज्ञान में पारस्परिक क्रिया की विशेषता पायी जाती है।

(ख) समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र काफी व्यापक है। इसके क्षेत्र के अंतर्गत व्यक्ति व्यवहार, समूह व्यवहार, भीड़ व्यवहार, नेतृत्व व्यवहार, मनोवृत्ति, स्थिराकृति, पूर्वधारणा, प्रेरणा, संज्ञान, प्रचार, जनमत, अफवाह, भाषा, संचार, वैयक्तिक एवं सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, भूमिका तनाव, सामाजिक तनाव, समूह संघर्ष, आक्रमण, उग्रता इत्यादि है।

(ग) समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के बीच कई समानताएँ हैं जैसे-

(1) दोनों सामाजिक विज्ञान है,

(2) दोनों में भीड़, समूह संस्कृति इत्यादि का अध्ययन किया जाता है

(3) दोनों में सर्वेविधि एवं क्षेत्र अध्ययन का उपयोग किया जाता है

(4) दोनों का दृष्टिकोण आनुभविक है। इसके बावजूद दोनों के बीच कई अन्तर हैं। जैसे-

(1) समाज मनोविज्ञान एक समर्थक विज्ञान है जिसका अध्ययन-केन्द्र व्यक्ति है जबकि समाजशास्त्र समर्थक विज्ञान नहीं है तथा इसका अध्ययन-केन्द्र समाज है।

(2) समाज मनोविज्ञान सामाजिक व्यवहारों के विभिन्नताओं पर बल देता है और इसकी व्याख्या जैविक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों के आधार पर करते हैं जबकि समाजशास्त्री, समाज के व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार की समानताओं तथा समस्याओं में रूचि रखते हैं तथा इसकी व्याख्या समान सांस्कृतिक प्रतिरूपों के आधार पर करते हैं।

(3) समाज मनोविज्ञान में प्रयोग विधि के कारण समाजशास्त्र की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिकता पायी जाती है।

(घ) समाज मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र में भी कई समानताएँ हैं जैसे-

(1) दोनों सामाजिक विज्ञान है।

(2) दोनों में संस्कृति तथा समाज का अध्ययन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से होता है

(3) दोनों में सर्वे तथा क्षेत्र अध्ययन का उपयोग होता है।

अन्तर :

(1) समाज-मनोविज्ञान समर्थक विज्ञान है।

(2) समाज मनोविज्ञान की विषय वस्तु मानव है जबकि मानवशास्त्र की विषय वस्तु समाज या संस्कृति है।

(3) समाज मनोविज्ञान का संबंध व्यक्ति के वर्तमान व्यवहार से है जबकि मानवशास्त्र का संबंध मानव जीवन के अतीत की घटनाओं से है।

(4) समाज मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार पर संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है, जबकि

मानवशास्त्र में संस्कृति के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है।
इस प्रकार हम देखते हैं कि समाज मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र में उपर्युक्त कई अन्तर हैं।

1.8 पाठ में प्रयुक्त शब्द कुंजी

(1) समाज मनोविज्ञान, (2) वैयक्तिक मनोविज्ञान, (3) व्यवहार (4) शुद्ध मनोविज्ञान, (5) व्यवहारिक मनोविज्ञान, (6) संवेग, (7) संज्ञान, (8) सामाजिक मानव, (9) अभिधारणाएँ, (10) परिकल्पनाएँ, (11) प्रेरणा (12) सामान्य मनोविज्ञान, (13) तत्परता नियम, (14) अभ्यास नियम, (15) प्रभाव नियम, (16) कर्तव्य, (17) दहेज, (18) जातिवाद, (19) संप्रदायवाद (20) भिखमंगी, (21) वेश्यावृत्ति, (22) पारस्परिक क्रिया, (23) व्यक्तित्व तंत्र, (24) सामाजिक तंत्र, (25) सांस्कृतिक तंत्र, (26) व्यक्ति व्यवहार, (27) सामाजीकरण, (28) समूह व्यवहार, (29) भीड़ व्यवहार, (30) नेतृत्व व्यवहार, (31) भाषा, संचार, (32) प्रचार जनमत अफवाह, (33) मनोवृत्ति, स्थिराकृति पूर्वधारणा,

(34) व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण, सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, भूमिका तनाव, सामाजिक तनाव, समूह-संघर्ष आक्रमण, उग्रता, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र।

1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. समाज मनोविज्ञान से अपना परिचय दें। अथवा
   समाज मनोविज्ञान की परिभाषा दें तथा इसका अर्थ समझाएँ।

उत्तर : उत्तर के लिए पाठ का 1.1 देखें।

2. समाज मनोविज्ञान के स्वरूप की व्याख्या करें। अथवा
   समाज मनोविज्ञान की विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर : उत्तर के लिए पाठ का 1.3 भाग देखें।

3. समाज मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र के बीच संबंधों एवं अन्तरों को समझाएँ।

उत्तर : उत्तर के लिए पाठ का 1.5 भाग देखें।

4. समाज मोविज्ञान एवं मानवशास्त्र के बीच के संबंधों एवं अन्तरों को समझाएँ।

उत्तर : उत्तर के लिए पाठ का 1.6 भाग देखें।

(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. समाज मनोविज्ञान के विषय विस्तार अथवा क्षेत्र अथवा समस्याओं का वर्णन करें।

उत्तर : उत्तर के लिए पाठ का 1.4 भाग देखें।

2. समाज मनोविज्ञान की परिभाषा दें तथा इसके स्वरूप की व्याख्या करें। यह किस प्रकार समाजशास्त्र तथा

मानवशास्त्र से संबंधित हैं?

उत्तर : उत्तर के लिए पाठ का 1.2, 1.3,1.5,1.6 भाग देखें।

3. समाज मनोविज्ञान की सफलता में बाधाओं की विवेचना करें।

उत्तर : उत्तर के लिए पाठ का 1.4 भाग देखें।

1.10 अन्य उपयोगी पठन सामग्री

1. डा० ए० के ० सिंह : समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा

2. डा० एस० एस ० माथुर : समाज मनोविज्ञान

3. तोमर : आधुनिक समाज मनोविज्ञान

■

समाज मनोविज्ञान की विधियाँ

पाठ संरचना

2.0 उद्देश्य
2.1 परिचय
2.2 निरीक्षण विधि
- 2.2.1 परिभाषाएँ
- 2.2.2 विशेषताएँ
- 2.2.3 सहभागी निरीक्षण
- 2.2.4 सहभागी निरीक्षण के गुण
- 2.2.5 सहभागी निरीक्षण के दोष
- 2.2.6 असहभागी निरीक्षण
- 2.2.7 असहभागी निरीक्षण के गुण
- 2.2.8 असहभागी निरीक्षण के दोष

2.3 प्रयोग विधि
- 2.3.1 प्रयोगशाला प्रयोग विधि का अर्थ
- 2.3.2 प्रयोगशाला प्रयोग विधि की विशेषताएँ
- 2.3.3 प्रयोगशाला प्रयोग विधि के गुण
- 2.3.4 प्रयोगशाला प्रयोग विधि के दोष
- 2.3.5 क्षेत्र प्रयोग विधि का अर्थ एव परिभाषा
- 2.3.6 क्षेत्र प्रयोग विधि के गुण
- 2.3.7 क्षेत्र प्रयोग विधि के दोष

2.4 सर्वेक्षण विधि
- 2.4.1 सर्वेक्षण विधि का अर्थ
- 2.4.2 सर्वेक्षण विधि की परिभाषाएँ
- 2.4.3 सर्वेक्षण का स्वरूप
- 2.4.4 सर्वेक्षण के गुण
- 2.4.5 सर्वेक्षण के दोष

2.5 सारांश
- 2.5.1 निरीक्षण विधि का सारांश
- 2.5.2 प्रयोग विधि का सारांश
- 2.5.3 सर्वेक्षण विधि का सारांश

2.6 पाठ में प्रयुक्त शब्द कुंजी
2.7 अभ्यास के लिए प्रश्न
- (क) लघु उत्तरीय प्रश्न
- (ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

2.8 अन्य उपयोगी अध्ययन सामग्रियाँ

2. समाजीकरण को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारकों या निर्धारकों का वर्णन करें।

उत्तर : उत्तर के लिए 3.3 से 3.3.8 देखें।

3. व्यक्तित्व से आप क्या समझते हैं? व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक कारकों का वर्णन करें।

उत्तर : उत्तर के लिए 3.5, 3.6 देखें।

4. व्यक्तित्व विकास में संस्कृति के योगदानों से संबंधित महत्त्वपूर्ण अध्ययनों का वर्णन करें, अथवा आधुनिक शोध के आलोक में संस्कृति तथा व्यक्तित्व के बीच के संबंध का वर्णन करें।

उत्तर : उत्तर के लिए 3.7 देखें।

Delete

3.11 अन्य उपयोगी अध्ययन सामग्रियाँ

1.	श्रीवास्तव, पांडे एवं सिर	:	आधुनिक समाज मनोविज्ञान
2.	डा० ए० के० सिंह	:	समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा
3.	तोमर	:	आधुनिक समाज मनोविज्ञान
4.	डा० एस० एस० माथुर	:	समाज मनोविज्ञान

■

मनोवृत्ति या अभिवृत्ति

पाठ संरचना

4.0 उद्देश्य
4.1 मनोवृत्ति का अर्थ एवं परिभाषाएँ
4.2 मनोवृत्ति की विशेषताएँ
4.3 मनोवृत्ति तथा सम्बद्ध संप्रत्यय
4.3.1 मनोवृत्ति तथा विश्वास
4.3.2 मनोवृत्ति तथा मत
4.3.3 मनोवृत्ति तथा प्रेरणाएँ।
4.4 मनोवृत्ति के निर्माण के कारक
4.4.1 समूह सम्बद्धता
4.4.2 प्रदर्शित सूचना
4.4.3 सामाजिक सीखना कारक
4.4.4 उत्तेजना पुनरावृत्ति तथा परिचितता
4.4.5 प्रेरणात्मक कारक
4.4.6 संवेगात्मक कारक
4.4.7 सांस्कृतिक कारक
4.4.8 व्यक्तित्व कारक
4.4.9 स्थिराकृतियाँ
4.5 मनोवृत्ति परिवर्तन के कारक
4.5.1 अतिरिक्त सूचना
4.5.2 समूह संबंधन में परिवर्तन
4.5.3 निकट संपर्क